महबत जी मिसिरी, खाधी जंहिं गुर गियाति सां,
सामी सुख संसार जा, तंहिंखों विया विसिरी,
कलिपत काल दीवार खों, पियो परिची पारि किरी,
अचे की न फिरी, जनम मरण जे दुख में.

ईश्वर के प्रति प्रेम-भावना का उल्लेख करते हुए सामी साहब कहते हैं कि जिस मनुष्य ने *सतगुरु के ज्ञान/बोध द्वारा प्रेम रूपी मिश्री/ मिसरी खाई है, उसको इतना आनंद प्राप्त हो गया है कि वह संसार के सभी भौतिक सुख भूल गया है। ऐसे परमेश्वर-प्रेमियों के सभी भ्रम और संशय आदि नष्ट हो गये हैं। उनका मनुष्य-जन्म सफल हो गया है। अब वे मुक्त हो गये हैं और जन्म-मृत्यु के चक्र में फँस कर पुनः दुःख भोगने वाले नहीं है।*

'चैतन्य चंद्रोदय' में कहा गया है,

सर्वे रसाश्च भावाश्च तरङ्गा इव वारिधौ।
उन्मज्जित निमज्जित यत्र स प्रेम संज्ञकः ।।

अर्थात् 'जिस में सभी रस, सभी भाव निमज्जित/डूबे हुए हैं, वह रस-सिंधु ही प्रेम है।' प्रेम जगत का कारण है क्योंकि परमेश्वर स्वयं ही प्रेम का स्वरूप है। विश्व के कण-कण में यह प्रेम-तत्त्व विद्यमान है। सारा संसार प्रेम के आधार पर ही टिका हुआ है। सारा संसार प्रेम का ही उल्लास और विकास है। प्रेम का सहारा लेकर परमात्मा के मंगलमय आँगन में पहुँच कर प्रेम का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा से अनन्य भाव से प्रेम करने वाला मनुष्य न केवल अपने स्वरूप को जान लेता है अपितु सत्य की पहचान कर आत्मा के दिव्य दर्शन भी कर लेता है। सामी साहब भी इसी दिव्य एवं अलौकिक प्रेम का उल्लेख करते हुए उसके मिठास की महत्ता वर्णित करते हैं। परमात्मा की प्रीति का स्वाद एक बार मिल जाने पर अन्य सब स्वाद तुच्छ प्रतीत होने लगते हैं। संसार के सभी छोटे-बड़े सुख फीके लगने लगते हैं। प्रभु के प्रेम या भक्ति से मनुष्य सांसारिक भ्रमों एवं संसों से मुक्त हो जाता है इतना ही नहीं, वह मृत्यु की दीवार लाँघ कर चौरासी के कुचक्र से छूट जाता है। जिस किसी ने प्रियतम परमेश्वर के प्रेम का प्याला पिया है, वह अलौकिक आनंद प्राप्त करता है।

प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय।।

■